अनुसूचित जमाती व इतर पारंपारीक वननिवासी
(वनहक्कांची मान्यता) अधिनियम २००६
व
नियम २००८

"भिलोरी भाषा"

सदर स्वैर अनुवाद भिलोरी भाषा बोलणा-या आदिवासींच्या सहाय्यतेसाठी प्रकाशित करण्यात येत आहे. अधिकृत अधिनियम व नियम शासनाद्वारे प्रकाशित इंग्रजी / हिंदी / मराठी राजपत्राप्रमाणे राहतील.

महाराष्ट्र शासन, आदिवासी विकास विभाग,
आदिवासी संशोधन व प्रशिक्षण संस्था, पुणे ४११ ००१ द्वारा प्रकाशित.
वेब साइट : http://trti.mah.nic.in

भारत के राजपत्र असाधारण भाग–2,
खण्ड–3, उपखण्ड ( )
तारीख 31 दिसंबर 2007 प्रकाशन हारू)
भारत सरकार
आदिवासी कामनु मंत्रालय

नई दिल्ली 31 दिसंबर 2007

जाहेरखबर

का.अ. (अ) केन्दर सरकार आदिवासी अनेबीजा हमेस ना जंगल रेहवासी (जंगल हकूं नी मानीता) कानवण 2006 (2007 क्रा. 2) नी धारा 1 नी उपधारा (3) मां, आलेली ताकीतों ने काममां लीने ता. 031 दिसंबर, 2007 ने तीनी तारीख मां खरी करे से, इने इना कानवण मां गणाय से।

हस्ताक्षर

(डॉ. बचित्तर सिंह)

संयुक्त सचिव, भारत सरकार

(फा. सं. 17014/02/2007 पी.सी. एन्ड–वी (जिल्द))

आदिवासी अने बीजी हमेस नी जंगल रेहवासी

(जंगल हक–हकनी मानेता)

कानवण–2006
(2007 ना कानवण गणती 2)

(29 दिसम्बर 2006)

जंगल मां रेवावाली एवी आदिवासी अने बीजी हमेस जंगल नी रेहवासी, ज्या जंगल मां पीड़ी थी रीर्‌या से, पण तीने ता रेवा ना हक नी लखाण नी से, जंगल हक अने जंगल जगाा मां खेड़ान करवानी मानीता आलवा अने नक्की करवा जंगल जगा, रेवानी नू कानवण नक्की करी ने तीना हकने मानीता आलवानी नक्वी करीने, जरूरी हाक्‌सी नी वाट पाड़वा हारू।

कानवण

जंगलमां रेवावाला आदिवासी अने बीजा हमेस ना जंगल ना रेहवासी सरकार ना आलेला हक, लांबी वखत मां काम आवानी जम्मेदारी अने कानवणी हक, नाली नाली जगा ना रक्सण अने काठी थी काठी वखत इन हको ने राखवा अने जंगल मां रेवा वाली आदिवासी जाति अने हमेस ही जंगल मां रेवा वाला नी रोजी, के खावा ना धान रखवाली हांते–जंगल नी रखवाली नू काम धाम पक्कू करवू भेलू से।

अने गुलामी नी वखत मां ने आजाद भारत मां राज जंगल ने हमेटती वखते तीना नी (आदिवासियूंनी) बापोती जगा पर जंगल हक अने तीनान रेवा नी जगा नो पण पूरो पूरो हक नी मान्यो, इनथी, आदिवासी अने हमेस रेवा वाली जात नो मोटो अन्याय थायो, इनथी अगल नो इ एक केवाय से। अने यूं जरूरी थाई ग्यूं के जंगल मांरेवा वाली आदिवासी जात अने बीजी हमेस रेवा वाली जंगलात जात, इनमा आदिवासी जात पण से, तीना ने राज ना अगेल ना वदारा हाते, इनी जात नी रोकण थी, इनाने रेवा हारू बीजी जगा जावूं पड़यूं, राज ना दवाब ही। लांबा वरहूं थी जीव जगा नी रोकाई, हाऊ जंगल तक जावा हारू इनामो ध्यान राखवो पड़े।

भारत देह ना बदा राज जगा हारू आजादी ना हतावन वरह मां संसद सत्र नीसा लख्या कानवण–पास होवां जोयी।

अध्याय–1

सरूआत

1.इना कानवण नु नानू नाम आदिवासी अने बीजी हमेस जंगल नी रेहवासी (जंगल हक नी मानेती) कानवाण 2006 से।

2.यो (कानवण नो) जम्बू–कश्मीर ने सोड़ी पूरा देह मां लग्गू थाई ग्यो से।

3.यो कानून तेरा बणहे जेरे केन्दर सरकार इन पर राजपत्र ऊपर दस्तखत करी लागू करहे।

परिभाषा– 2 इना कानवण हारू, नीसा लख्या मुजब खुलासो पण जोयी।

(क) सामलित जंगल सादन – गाम मा रेवावाला मा, हद मां रीने जुगून रेवाज मा जंगल जगा के सरनोई हरकी जमी हवापाणी हारू सोड़ी राखी से, तो रखेल जंगल, रोकेला जंगल नी जगा, जेवा जंगली जानवारां नी रखेल जमी, के जंगली जानवारा नो वगीसो, ता इना लोगूं नी दौड़ हती।

(ख) आबद्या मां पड़ेला जंगली जनवारू नी रेवा नी जगा– इना हारू विज्ञान अने जरूरनी माप–तोल ही राखेला, (बणावेला) इनानी रेवानी जंगल जगा (रेहटांण) तोड़ी

ने बरोबर अने खुला रूप ही कायम से, एवी जंगल जनवारू हारू राखेली जगा–कायम राखवा हारू जाणकार कमेटी ही खुलासो करावी ने नक्की खबरे, करावी जोयी, इनमा ताहनी सरकार ही कायम करेला ताइनी जगा ना जाणकार भी जोड़ो हे, इनमा धारा 4 नी उपधारा अने (2) ही खास हाते आस्था ही सोकला मां कायम करवा मां आदिवासी मतरालय नो एक मेम्बर रेहे।

(ग) जंगल मां रेवा वाली आदिवासी जाति ना आदिवासीयूं ना एवा सदेस के जात केवाय से के, ज्यो खास करीन ने जंगलमां (वगड़ा मां) रेसे, अने जीवा हारू जरूरी सादन जंगल के जंगल नी जगा ऊपेर रेसे। अने इनी अदार ही आदिवासी सरनाई (चरगाह) जाति पण से।

(घ) जंगल जगा–ही कइनी जंगल सोकला मां आवावाली कइनी जगा अने तां बगर रोपेलो जंगल, वगर अलग करेलो जंगल–कायम से, राखेलो जंगल, जंगली जनवारा हारू जंगल, के देहनों जंगली जनवारानो वगीसो से।

(ङ) जंगल नोहक–मां धारा 3 मां कइना कइना जंगल हक साफ–साफ बताडेला से।

(च) जंगल गाम–एवी वहती केवाय से के कइना राज मां जंगल खाता ही जंगल नी रूप जेवो से तेवो राखवा हारू जंगल नी माई कायम करी से, के ज्यो जंगल रोकण रीत गामूं मां बदलो कर्यो से, अने जंगल गाम वहती, नक्की करेली तीनानी कई पण नाम राखे, अने इने अदारे–सरकार पेहलां थी धारेली खेती के, बीजा काम हारू पण जमी से।

(छ) गाम संभा– नो मतलोव एवी गाम सभा ही से के गाम ना बदा मोटी उमर ना सदेस मली ने बणे से, ने एवां राजू नी दस्या मां, जां कइनी गाम पंसात नी से, फलिया, नाका ने बीजी जातरीत नी बणेली गाम समेतियां अने सुणेली गाम समेतियां पण से, इनमा, बइरां नो पूरो हिस्सो राख्यों से।

(ज) वहती– मां एवा सोकला से जिनमा जूनी आदिवासी टोली अने खेती पेलां टोला अने जंगल वहती वाला आदिवासियू हारू जंगल मां रोकेले जंगल अने राखेला। जंगलू मां जातरीत ही वहती अने एर्वां बीजी बहती भेगी से।

(झ) पालेला नवी उपज जंगल– मां जेड़ वाला रोप (पौधा) इमा–बांहड़ा, झाड़–झंखड़, ठूंठडूं, वेंत, तूसार, कड़ा, मोद, मोम, लाख, टीमरवो, ओखदना झाडूं, जड़ी–बूटीयों, दवाना झाडू, कांदा, हरका झाडू बणावा हारू रेसे।

(ञ) नाडेल अभिकरण– नी धारा–2 मां बताड़ेली नवी योजना ही से।

(ट) राजनी खबर– नो मतलोब सरकारी खबरही से।

(ठ) विहित– इना कानवण मां वणाव्या नियमूं थी मतलोब से।

(ड) अनुसूचित क्षेत्र– भारत देहनी कानवण नी सोपड़ी नी धारा (2) ना हिस्सा (1) मे वताड़ेला खास नम्की करेला सोकला (क्षेत्र) से।

(ढ) सतत उपयोग– नो योअरथ से की भाते भांत ना जीवं नो कानवण, 2005 नी धारा 2 नो हिस्सा (छण) मां से।

(ण) अन्य परंपरागत बन निवासी– एवा कइना सदेस के टोला केवाय से, ज्या

13 दिसम्बर, 2005 ना पेहला कम थी कम तीन पीड़ी हूदी ठीक ढंग ही जंगल के जंगल जमी मां वहते लो अने जो जीवा हारू खास खास जरूरी ताहना समान ऊपेर रैतलो।

स्पष्टीकरण– इना हिस्सा (खंड) नो अरथ पीड़ी एतरे 25 वरहूंनी केवाय से।

(त) 'ग्राम' ही नीसा लखेला मतलोब केवाय से।

(1) पंसात (नियम मा नकी करेला सोकला नो बदारो) कानवन, 1996 नी धारा 04 नो हिस्सो (ख) मा नकी करेला कईना गाम।

(2) नकी करेला सोकला ही अलग पंसातो ही कईना राज कानवण मा गाम ना रूप मा नकी करेला कईना सोकला।

(3) जंगल गाम ना जुनी वहती ने वगर सर्वे करेला गाम। भले तिना गाम ना रूप मा जाहेर थाईयू कि नी थाईयू। के (या)

(4) तिना राजू नी दशा मा जां पंसाते नी से ता जात धर्मना गाम भले कोईने नाम थी होये। 1972 का 53 (थ) जंगली जानवारू जंगली जीवुंनी (देखरेख) नो कानवण 1972 नी अनुसूची। थी 4 मा वसाडेला जनवारू मा ऐवी जातियों बसाड़ी से के जो धरती जंगली जनावरन ना रूप मा रेसे।

अध्याय–2

वन ना अधिकार (हक)

3.(1) इना कानवन ना माहिता जंगल मा रेवावली आदिवासी जात्यो अने बिजा हमेसा जंगल मा रेवावाला बदाजंगल ज़मी रेवावाला नीसे लख्या हक राखेसे। जे खुद नीते फेर फलिमा वाला बेहे ना पक्समा से।

(क) जंगल मा रेहनारी आदिवासी जास अने बिजी हमेसा रेहनारी जंगल वहती ना कोई सदेस कईना सदेसू ने रेवा हारू के जीवा हारू जीवे खेती करवा हारू जीवे के भेगा थाईने ठराव में रईने जंगल, जभी राखे से अने तिनमा रेवा नो अधिकार;

(ख) नकी करेला टोली मा अधिकार भले कईना नाम भी जाणे से तिनमा तेरे ना राजा ना राजू मा के जागेरदारी के ऐवा कईना वसमा ना राजू मा बणेला अधिकार पण सामलित से।

(ग) उगाड़ेला जंगल नी उपज जिना गाम नी हीम पर के बाहेर से तां हमे भेगा करता आव्या से अने मालिक ना रूप मा भेलू करवा नी पोंस अने तीने काम लेवा अने खरस करवा नो अधिकार से।

(घ) फरियोल टोला ना मासला अने तलावुनी बिजी उपज मा एक ते एक जगा रईने फरियेल टोलियो जूनी रीत थी अने एक की जो फरियोल रईने भी उपज लेवा नो तीनों अधिकार आवहे।

(ड) (1) पेलो अधिकार जिनमा जूनी आदिवासियों ना टोला इने खेती पेला टोला हायं अने घेरू रेवा ना सामलित, जमी धारण करवानो हक से।

(च) कईना ऐवा राज मा जा ऐवा दावा नो झगड़ो से कईना ना नाम थी झंगड़ा नी जमी मा पण तिनो अधिकार से।

(छ) जंगल जमीन उपर हक हारू कईना ताहना थाईला न्याव के फेर कईना राज नी सरकारे अलिला पट्टा के फेर हक मा बदलवा नो अधिकार।

(ज) जंगल ना बंदां गामू ताहना जूना रेवाना घेरू के वगर सर्वे वालां गामू अने बिजा गामू ने वहवा ने बदलवा नो अधिकार भले एमां तेसीलना गामू मा लखेला रे से। त्यां जाहेर थाया कि नी थाया।

(झ) ऐवा कईना सामलित जंगल ना सादनु नी रखवीला अने फेर भी झाडू ने उगाडवा ने ऐवा तेवड़ करवाओ अधिकार। जिनी के त्यां हमेस पालपोस करे से।

(ञ) ऐवा अधिकार जिनमा कइना राजू ना कानवण के जीवे हक राखवा वाली जिला पंसात ना जीवना हक वाला सोकला नी सभा (कमेटी) ना कानवण नी मान्यता आले से। के तिने कईना राज मा वहेसी आदिवासी नी कईनी रीति–रिवाज के रूढ़ीवाला कानवण मा आदिवासियों ना अधिकारों ना रूप मा माले से।

(ट) कई तरे ना जीवु कने पुगवानो अधिकार अने घणी जात ना जीवु तीना रिती–रिवाज ना अकल अने हमेस ना ज्ञान नो सामलित अधिकार।

(ठ) कईना ऐवा बिजा ठेट ना अधिकार बणेला से तिने सेवा राखवा जंगल मा रेवावाली आदिवासी जात्यू के बिजी ठेट नी जंगल नी बहती ही जूना रूप नी काम मा आवी रीसे। त्यां हिस्सा (क) से खंड (स) में आगे खोलेलो कानवण से। जंगली जीव नो हिकार करवा के तिने फसाड़वा हारू तिना डिल नो कईनो हिस्सा काढ़वा हारू यो ठेट नो अधिकार नी से।

(ड) पेहला हरका तिनी जगामा रेवानु अधिकार तिना मामला मा वैवस्था वाली जमी से तां आदिवासियों ने बिजी खेत नी जंगल मा रेवावली जात ने 13 दिसम्बर 2005 ना पेहला कई नी पण जंगल जमीन थी फेर थी बहती करवा तिने कानवणी अधिकार करया वगर वगर हक थी नहाड़ी दे– दा के अलग कर दि दा से। 1980 का 69 (2) जंगल रोकण ना कानवण। 1980 मा कई नानी वात होया पण केन्द्र सरकार ये बराबर नीसे लखेला हकु हारू जंगली नी जमी नी वैवस्था कर हे। इनमा ऐतरे हात वीगा मा, पन्द्रेपसोल झाडू कापवा नु हकम से। मतलब ऐम कि पन्द्रे पसोल झाडू ओहे तो ही बिजली सुविधा हारू जमी आली सकिये। ऐतरे–

(क) स्कुल

(ख) अस्तपताल (दवारवानु)

(ग) आंगनवाड़ी

(घ) ठेको (उचित कीमत की दूकान)

(ड) विजली अने टेलीफोन

(च) पाणी नी टंकी अने नानु तलाव।

(छ) पिवाना पाणी पूर्ति अने पाणी ना पाईप नी लेणे।

(ज) पाणी अने सुमाहाना पाणी नी रोकण।

(झ) पीयत ना पाणी हारू नेहरियो काडवी।

(ञ) नवी–नवी उरजा पैदा करवा ना सादनु। (गोबर गैस, पवन चक्की, सौर ऊर्जा आदि।) फोन लेण नाखवा नी जगा।

(ट) हूनर हिकाड़वा ने धंधा मा वड़ोतरी टेनिंग ना बंगलानी जगा।

(ठ) सड़के काड़वी।

(ड) सामुदायिक केन्दर।

नोटः– पण जंगल नी जगा नो ऐवो बदलो तेरे करियो जाहे जैरेः–

(1) इनी उपधारा मा वताडेला मतलब हारू बदलेहे जंगल जमी ना तेवा हरैक मामला मा एक हेक्टर थी कम जगा होवी जोएं/अने।

(2) ऐवी उनेती वाली योजना मा (अनापति) (वना आपत्ति नी सरत्यो रेसे। ये से पारिस (अनुशंसा) गाम सभा थी होवी सावे।)

अध्याय–3

जंगल अधिकारो नी मानथी, तिनमा फेर थी थापण अने सामलित करवु अने तिनी वात ना मामला।

4. (1) कईनी वखत के कईना बिजा कानवण मा वताड़ेली वात होवा थता। अने इना कानवण ना नियम मा रिने केन्दर सरकार....

(क) ऐवा राजू मा के राजू ना सोकला, जंगल वहती वाली आदिवासी जात ना जा तिने धारा 3 मा वताड़ेला बदा जंगल अधिकार हारू आदिवासी जात ना रूप मा घोसणा करी से।

(ख) धारा 3 मा वताड़ेला बदां जंगल अधिकारो हारू बिजी ठेट नी वहती ना जंगल अधिकार ना मानेती करेसे अने तिनमा सामलित करेसे।

(2) जंगल ना वगीसा अने वन जनवारो रेवावाली जमी था रेवावालां जंगली जीवु नी रेवा नी जगा मा कानून मा मानिता मळेला जंगल अधिकारो ना फेर थी कायम–करिया जाहै। पण तिना पण जंगल अधिकार वाला ने फेर ही कायम नी कर है। कईनी पण रीत मा तीना अधिकारों उपेर जंगल जनवारों नी रोकण हारू टाकेला सोकला नी जोवण नी मतलब हारू नीसी लखी वात्यो करवा नी दसा मा कई पण फरक नथी पड़ है।

(क) वस्यारवाला बदा सोकला मां धारा 6मां, वताड़ेला अधिकारोनी मानेता अने पूरा करवा नी बात पूरी थावी जोयी।

(ख) राज सरकार ना जंगल जनवारांनी जगा ही जंगल जीव कानवाण 1992 मां तीनी ताकीत लगाड़ता के थापण करी से के अधिकार वाला नी हाजरी मां जंगल जनवारू ना हालसाल ना परभाव ही कदी पूरोनी थावा वालो नुकसान सेअने इनी जात ना जनवारू ने जीवा ने अने रेवा नो (समक) भो लाग्यो से।

(ग) राज सरकारे यो पक्को वस्यार करी लेदो से के 'जीवो अने जीवा दो' हरको बीजो कइनो रोहो नथी से।

(घ) फेर ही वहाड़वा हारू धन हूण्डी त्यार करी ने आबद्या मां पड़ेला मनख के मनखना टोळा हारू तहूनी रोजी रोटी अलाड़वा हारू लग्गू करे से, एवां हारू केन्दर सरकार साफ कानवण ने नीति लागू करवा हारू आलेला वसन पूरो करवानी वेवस्ता पूरी करे से।

(ड) नक्की करेलू फेरथी वहाड़वानु काम अने सरकार नी धननी हूण्डी जिन सोकला मां लग्गू करवी से तीनी हारू ताहनी–गाम सभा नी आजाद समेती लखाण में लीले से।

(च) कइनी फेर ही वहती तेरा थाहे जेरे ताहना–तीना गामू ना जमी आलहे, ने लग्गू थइलूंधन सरत पूरी थही पण आबद्या मा पड़ेला जंगल ना जीवू नी जगा जीने सोकसी करवा ना अधिकार मल्या से अने बाद भा राज सरकार अने केंदर सरकार कोई पण–बिजा काम हारू इना नी जगा नी बदलहि।

(3) जंगल जमी अने ताहनी वहती हारू राज के केन्दर सरकार के राज एरिया मा जंगल जमी पर रेवावाली अने आदिवासी अने ठेट नी रेहवासी जंगल वहती ने हूनी धारा मा जंगल अधिकार नी मानिता तैरे पूरी थाहै जैरे ईनी आदिवासी समाज के फेर इनी टोलाये अने फेर बिजी कईनी जाती वलाये कब्जों करी लेदे लो तो 13 दिसम्बर 2005 ना पेहला तक कदी ईहूने हटाड़ी दे दा औहे तैर तिहूनें पासो कब्जों जड़ी जाहे।

(4) उपधारा (1) इनी धारा मा वसवेला नो अधिकार से।

कदी आदमी मरी ग्यो होये तैर बयर ना नामे आ जगा थाई जाहे। केदाड़ बेहे मनखूं जिवता होये तैर तो आदमी अने बदर बेहेने नामे रजिस्टरी थाहे। अने घेर नो एक मुखियो होहे तैर ते तिने नामे रजि टरीं थाहे। वारिस नी गैर हाजरी मा तीना मेरे ना रिसतादारी ना नामें रजिस्टरी था है।

(5) ज़ेवु बिजी रिते पण कायदो से कि जिनी जमी पर आदिवासि को अने बिजाजो कि ठेट ना रेहवासी कोई भी सदेस नी जमी ज्यो रेसे तीने तेरां तक नी हटाड़े है ता बड़े काम पण कायदो नु काम पक्कू अने पूरू नथी करयूं होयें तां तक पेहला वळां नो अधिकार रेहे।

(6) ज़ां तक उपधारा (1) मा मानिता मले से ने जंगल अधिकार नी धारा 3 नी उपधारा (1) हिस्सा मा वताड़ी जमीन ना बारा मा से। ऐवी जमी कानवण ना पेहली तारिख मा कईने कटम के पेला वळा ना हक मा रेहे अने जमी नो खास कब्जादार ना (एरिचा) सोकळा मा रेहे पण आ सरत से के आ जमी ना सोकळा ना 4 हेक्टर (28 बीघा) ती वदारे नही होवी जोऐ।

(7) जंगल अधिकार बदी रोकर अने कारवाई थी सूटाकरीने लग्गू थाहे, इनमा जंगल रोक नो कानवण 1980 मां– मळेली मजूरी (अनापत्ति) से, इना कानवण मां वताड़ियाबाद इनी जमीं पर जंगल नी नानी योजना हारू जेवां नानी रोपणी हरकानी सोकूं आज नू–मूल (मूल्य) पण सामलेतमां रेहे।

(8) इना कानवण माहितां मानिता मळेली जंगल अधिकारों मा रिने जंगन रेहवासी आदिवासी अने बिज़ा ठेट ना जंगल ना रेहवासी नो पण जंगल भूमि पर हक रेहे इने अधिकार रेहे। ज़ो आ साबित करी सके कि राज नी वदांरा थी रोकण थामा वगर तिनी रेवा नी ज़गा ने खेती करवा ही हटाड़िया से। ऐतरे ईनी ज़मी उपर खेड़ान ही पांस वरहू ना अन्दर–अन्दर नी करियू से जिना हारू या ज़मी आलेली।

जंगल अधिकार लेवा वळां नो फरज।

(5) कईना जंगल अधिकार लेवा वळां, तिहूंना सोकळा मा इना कानवण थी तिहूना अधिकार मळया से गाम नी सभा अने गाम नी समेति मां नीसे लख्या मुजम ताकतवळी से।

(क) जंगल ना जीव जनावर अने जंगल ना बदा जीवुनी देखरेख करवी।

(ख) यू पूरी तरह जाणी लिवु जोएं कि पाणी ना सोकला, पाणी नी आव अने बिजा कईना ऐवा सोकळा जां विवाद हरकी वातयू आवती होए तिनो पण पूरो–पूरो रक्सा नो ध्यान राखवो।

(ग) यूं काम करवु जरूरी से कि जंगल मा रेवांवळा आदिवासी अने बिजा जंगल मा

रेहनारा नी जगा़ कोई भी कोईने पण नुकसान नी करें। इनी सोकसी करवी ज़ोए। इनथी कोईनी रिती–रिवाज अने ताहनी धरती पर मळेलो हक नो नुकसान नी थावु जोएं।

(घ) यू तै करवु से के सामळित जंगल ना सादनु हुदी पूगवा नो पूरी तरै लागू करवा अने ऐवा कईना कामकाजू ने रोकवा हारू जंगल ना जी जनावर ने कोई तकलीफ नी आवे ऐवा ग्राम सभा मा नकी थाईला कायदा अने नियम पर सालवु।

अध्याय–4

ये ही बात यहां लिखना जंगल ना अधिकारों ने लागू करवा हारू अधिकार मा लेवा नी कार्यवाही अने तिना वस्यार नो ढंग (तरीको)

6. (1) गाम सभा नी ऐवी कईनी टोळी ने जंगल ना अधिकार के फेर बेहे नी धरती नी हिम ना आधार पर काम काम जरवा नो अधिकार सरू करवा नो वस्यार थाहे। ज़ो कि इना कानवण ना माहितां जिने त्यो अधिकार मळेलो से तीनी सीमाना माहिते रेहता आदिवासी इने पेहल्खां थी रेहनारा नो दावो मजूर करीने तिहूंने मेळवी ने अने त्यां खरावी ने इने ऐवी रित मा ज़ो मेळावी जाए, तिहूंनी सिफारिश करीया ग्यांबदा दावा ना ऐरिया ने आंकता थका थाई नक्सो त्यार करवा हारू आल्यू जाहें। तैर गाम नी सभा मातिनी मंस्या नो सकलप पास करहे। तिनाबाद तिनी एक फोटू कापी उपखंड ना वाकिब नी समिति हारू आगे बढ़ाव है।

(2) गाम समा ना ठेराव ही कइनो दुःखी आदमी उपधारा (3) मां बणेली उपखंड मां बेठेली समेति मां यासिका पेस करहे, अने उपखड नी बणेली समेति एवी यासिका पर वस्यार करहे, अने तीनों नपटारो करहे। पण हरेक ऐवी यासिका गाम सभा ही पास थावा ना हाट (60) दन ना माईतां पेस थाहै। पण यो ऐम कि ऐवी यासिका नो कईना आदमी अने् आदमियो ना खिलाफ मामला नो नपटारो तां तक नी थाहैं जां तक तिनाने पेस करवाना नो बरोबर मौको नी आलियो औहे।

(3) राज सरकार गाम सभा नो पास करेलो ठेराव नी परीक्षा करवा हारू एक उपखण्ड हरकी समेती बणावहे अने वन ना अधिकार अने कायदा तयार करहें। अने तिने उपखण्डों ना अधिकारो ही आखरी रूप आलवा हारू जिला नो समिति मा मोकल है।

(4) उपखण्ड नी समेती खास करीने दुःखी थाईलां कईनो आदमी उपखंड नी समेती मा अर्जी पेस करहे ताहना नपटारो थाया बाद हाट दन अन्दर जिला नी समेति मा यासिका पेस करी सके से। अने जिला नी समिति नी यासिका पर वस्यार करी ने तिनो नपटारा करहें। पण गाम सभा ना ठेराव ना विरोध मा कोई पण यासिका जिला नी समेती मा हुदी पेस नी करी सके से।

जां तक की उपखण्ड स्तर नी सभा मा आ यासिका पेस नी कर देदी होएं अने तिन पर वस्यार नी करयो होए तां तक ऐवी यासिकार हुदी पेस नी करी सकें से।

पण यासिका ना दुःखी आदमियों ना विरोध मा नपटारो तेरां तक नी थाहें जेरे तिनाने इनाने मामलो पेस करवा हारू बराबर मोको नी आलियों ओहें।

(5) राज सरकार उपखण्ड नी समेती, ये तयार करेला जंगल ना अधिकार ना रिकाड पर वस्यार करीने आखरी रूप आलवा हारू पास करीने एक जला नी समेती बणाव है।

(6) जंगल ना अधिकार ना रिकाड पर जिलानी कमेटी नो ठेराव आखरी अने पक्का मान्यो जाहें।

(7) राज सरकार जंगल अधिकारू ने मानीता आलवा हारू अने कायम करवा हारू मानीटरी करवा एवी जाणकारियो अने रपोटो ने जो ताहनी सभा (एजेन्सी) थी मांगी जाय त्या नोडल एजेन्सी ने पेस करवा हारू एक राज बराबर नी मानीटरी समेति बणावहे।

(8) उपखण्ड नी समेति, जिला नी समेति, अने राज नी समेति मा राज सरकार ना तेसील, जंगल ने आदिवासी विभाग ना अधिकारी अने पंसात विभाग ना ते सदेस रेहे, तीनाने पंसातराज संस्था ही नियुक्ति करहे। इनमा बे सदेस आदिवासी जात ना रेहे। अने इनमा कमथी कम एक बयेर इनी कमेटी मां रेहे।

(9) उपखण्ड भाग नी समेती जिला भाग नी समेती अने राज भाग नी निगरानी नी समेती नी बणावट अने काम अने तिहुना आड़ी थी आपणा–आपणा काम करवानु पेहल करीया काम नो जो ढंग ओहे सिहनी नी मजूरी थाहें।

अध्याय–5

गुनो अने (दण्ड)

(7) जां कईनी समेती के समेती ना कईना अधिकारी के कईना सदेस इना कानवण ना, के ताहना जंगल अधिकारो नी मान्यता हारू कईनो नियम ना कईना नाना नियमो ने ताड़ेहे के त्यां इना कानवण मा गुनो करवा पासे तिने गुनागार हमजो जाहे इना गुना हारू तिना उपर कार्यवाही थाहे अने तिनाने एक हजार हुदी दंड लागहे ऐतरे या इूना दंड ना भागीदार रेहे। पण इनी उपधरा नी कोई बी बात इनी धारा मा सामिल कोई अधिकार मा समिति ना कोई भी सदेस तां तक तीना गुना नो भागीदारी नी मानी जाहे कि तिने इना गुना नो भागीदारी नहीं मानियो जाहे कि तिने इना गुना नी मालम नथी ऐवी अने इना गुना ने बिज़ी वरवत नी करहें हाऊ होशियारी थी काम करी कि फैर तिने गुनो करवा नो पेला बदी जाळवण करी लेही।

(8) कोई पण कोरट इना कानवण नी धारा (7) हात ना गुना तां तक नी लेहे, जाहूदी जंगल ना रेवा वळा आदिवासी कईनी गाम सभा ना ठेराव हारू कोई भी विवाद नो मामलो मोटा अधिकारी उपर कईना ठेहराव ही गाम सभा राजभाग वस्यार समेती (मानीटर) आठ दन मा खबर नी आले अने राजभाग नी मानीटरी समेती ने ऐवा अधिकारी ना उपर कार्यवाही नी कर देदी ओहे।

अध्याय–6

प्रकीर्ण (विविध)

(9) प्राधिकारण ना सदेस लोक सेवक थाहे।

अध्याय चार मा बातडेला प्राधिकरण ना हरैक सदेस अने इना कानवण ही तिनाने आलें ली ताकत ने काम मा लेवा वळा हरेक बिज़ा अधिकारी भारत देह नी दंड संहिता नी धारा 21 ना मान थी लोक सेवक केवाहे।

(10) ताजा भाव थी करेली कार्यवाही हारू सोकसी (संरक्षण)

(1) अणा कानवण ना माईतां असलभाव थी करेली कार्यवाही अने करी जाहे हारू ऐवी उम्मीद कईनी वात हारू कईनो की विवाद अने कोई भी बणेला कानवण भी केन्द्र सरकार या राज सरकार ना कईना अधिकारी कि कर्मचारी पर कार्यवाही नी थाहे।

(2) इना कानवण ना माइता असलभाव थी कईनीवात पर कईना नुकसान हारू तिनी उपर कईनो दावो के बिजी कानवण कार्यवाही केन्द्र सरकार की राज सरकार कइना अधिकारी के कर्मचारी उपर नी करहें।

(3) इना कानवण का रिने असलमन ही करेली कार्यवाही नी कईनी वात उपर कोई धावो अने कानूनी कार्यवाही अध्याय 4 का वताडेला से तिहूना ढंग थी ताहना अध्यक्ष सदेस, मंत्री (सचिव) अधिकारी अने बिजा कर्मचारी उपर कार्यवाही करी जाहें।

(11) नोडल अभिकरण

आदिवासी मामला ना भारत सरकार नी कसेडी के केन्द्र सरकार नी समिति मा बणेला कोई अधिकारी इना कानवण नी सरतियो लागू करवा हारू नोडल ऐजेन्सी थाहे।

(12) केंदर सरकार ने आदेस जारी करवा नी सक्तिः– अध्याय 4 में वताडेला (जहिरा) हरैक प्राधिकरण इना कानवण ना माईतां काम करेसे ने जीव नी ताकत नी आहार बांधहे ऐवा मामला के खास आदेस मळहे जो कि केंदर सरकार वरवत–वरवत पर लखेला मोकलहें।

(13) कानवण ने कईनी बिज़ी रित अने बिज़ां कानवण मा नानो रूपनी करी सकहेंः– इना कानवण अने पंसात ना नियमो (अनुसुचित क्षेत्रा का विस्तार) अने कानवण 1996 का (1996 का 40) बिज़ाना बंधेला कानवण ना सिवाय इना कानवण ना नियमुतिनी वरवत लागू कईना बिज़ा नाना नियमु ना हंगत मा ओहे नी के इन्हूनो नानो रूप थाहें।

(14) नियम वणावानी ताकतः– (1) केंदर सरकार इना कानवण ना बणेला नियमो ने लागू करवा हारू सुसणा जारी करीने अने पेहला सस्पोकरी ने नियम बणावी सकहें।

(2) खास अने पेहला वताड़ेली ताकतयो नी बड़ोतरी पर उल्टो असर पडिया वगर, ऐवा नियम निसा लिख्या बदा अने कईना विसय हारू।

(क) धारा 6 का वताडेली वातयू ने लागू करवा हारू कामकाज नो खुलासो।

(ख) धारा 6 नी उपधारा (1) ना माईता ना दावो लेवा, तिहूने भेळा करवा अने तिहूना खरावानों अने जंगल ना अधिकार नो भाग करवा ने सिफारिश करया थका हरैक दावा ना

एरिया ना लखेला अने नक्सा तयार करवानी कार्यवाई अने तिनी धारा नी उपधारा (2) ना माईतां नाना भाग नी समिति नी यासिका (अर्जी) देवा नी रीति।

(ग) धारा नी उपधारा (8) ना माईतां नाना भाग नी समेती जिला भाग नी समेती अने राज भाग नी निगराणी समेती ना सदस ना रूप मा लगाडेला राज सरकार ना राजस्व विभाग जंगल नो विभाग अने जनजाति मामला ना विभागो ना अधिकारियो नो कद;

(घ) धारा 6 की उपधारा (9) का माईतां नाना भाग नी समेती जिला भाग की समेती राज भाग नी निगरानी नी समेती नी बनावट अने तिमा कामू नी जवाबदारी ना आपणो तरीको काम ना रूप मा की ग्यी कार्यवाही।

(ड) कोई बिज़ी वातयो अमल मा लावा जोईए के अमल आवी जोईएं।

(उ) अणा कानवण ना माईतां बणावेला हरैक नियम बणावाना बाद मा वेगा थी वेगा संसद ना हरैक सदन (बैठकों) ना हामे जैर संसद सालु होएं तेर– तरी दन नी कोली ना माईतां राखयू जाहे। या कोली सदन सालवा एक वरवत मा के बे के वदू वरवत ना वारे–वारे अने वदू वरवत मा–पूरी थाहे। तिनी वखत ना पेहला नी वरवत ना ठीक थोड़ा दन बाद मा कोली खतम होवा ना पेहला संसद ना बेहे सदन माइना नियम ने कईनो बदलो करवा हारू राजू थाई ते यो नियम ऐवो बदलाव नी हाते लागू थाई जो कदी पेलो सदन बंद होवा पेला बेहे सदन राजू थाई जाये कि या नियम बणायो ज़ाये। तिना बाद यो नियम तेवो ने तेवो लागू थाई ज़ाहे। के खतम थाई जाहे। ऐवा कईना बदलाव अने खतम थावा नो होवा पर भी यो नियम लागू रेहे।

भारत के राजपत्र असाधारण, भाग–2 खण्ड–3, उपखण्ड (1)

तारीख 1 जनवरी 2008 में प्रकाशनार्थ

भारत सरकार

जनजातीय कार्य मंत्रालय

नई दिल्ली, 01/01/2008

अधिसूचना

सा.का.नि. .....(अ) अनुसूचित जनजाति (क्षेत्रानुसार) अने बिजी पुराणी ढंग थी जंगल मा रेहनारी (जोवन अधिकार नी मानेत्ता ना रूपमां) नियम 2007 ना हरूप मा जंगल मा सरू थी रेहनारी अने अनुसूचित जनजाति अने बिजी ठेट नी रेहनारी (जो कि जंगल ना अधिकारी नी मानेती) अधिनियम 2006 (2007 का 2) नी धारा 14 नी उपधारा (1) नी मंसा ना आधार पर भारत सरकार ना जन जातीय (आदिवासीयो) ना काम ना मंत्रालय नी अधिसूचना सं.सा.का.नि. 437 (अ) तारीख 19 जून, 2007 ना माईतां तारीख 19 जून 2007 ना भारत ना राज पत्र ना भाग 2, खण्ड 3 उपखण्ड (1) मा जाहेरू करयू हतु। ज़िनमा ऐवा बदां आदमियो थी, जिन थी तिहूने असर पड़वानी उम्मेद से। तिनी तारीक थी जिहूने

पेहला नी अधिसूचना ही भरेलू राजपत्र ना कागदू जनता ने आलेली हती, दो वीस ने पांस दन नी कौली खतम होवा ना पेलां थी पेहला आरोप अने विस्चार मांगेला हता; अने पेहलां राजपत्र नी जो कागदू परसियो जनता ने 25/06/07 मा आलेली। अने उपर ना हरूप नियमो ना विसय मा जनता ही मळेला आरोप अने तिना बारां मा विस्चार पर केंदर सरकार आड़ी थी एक हरका रूप मा विश्यार करी लिदा से;

ऐतरे हाऊ केंदर सरकार अनुसूचित जनजाति अने बिजी ठेट नी रेहनारी जंगल मा जंगल नी मानिता ना अधिकार ना कानून 2006 (2007 का 2) नी धारा 14 नी उपधारा (1) अने उपधारा (2) आडी थी, आलेली सक्तियो ने काम ना लेता थका जंगल मा रेहनारी बदी आदिवासियों नी जातियों अने ठेट नी रेहनारी जंगली जातियो ना जंगलना अधिकार अने जंगल नी जमी पर खुद ना पोसण करवा नी मानिता देवा अने जिनमा भेळावा हारू नीसे लख्यां नियमु बणावे से अनेः–

1.संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारंभ– (नानु नाम, बड़ोतरी अने सरूआस)

(1) इना नियमु नु नानू नाम आदिवासी नी जातियो अने ठेट ना ढंग थी जंगल मा रेहनारी (वन ना अधिकारीनी मानेता) नियम 2007 मा है।

(2) इनो सळण जम्मू कसमीर ने सोड़ी ने आरवा भारत मा लागू थाहे।

(3) इ राजपत्र मा जाहेरू करवा नी तारीक पण लागू थाहें।

2.परिभाषाएं– (1) अणा नियमु मा जा तक कि जेवू थापण थी बिजू कईनी उम्मेद नथी होए।

(क) 'कानून' थी जंगली जातियो अने ठेट नी जंगल मा रेहनारी जातियो (जंगल रेहवासी अधिकार नी मानेता) कानवण 2006 (2007 का 2) ना रूप मा से।

(ख) 'खास–खास जीवानी जरूरते' थी जेवू कि कानवण नी धारा 3 नी उपधारा ना खण्ड (क) खण्ड (ग) अने खण्ड (घ) मां उखेलो से, जंगल जमी पर जीवे खेती करीन खेतर मां पाकेली उपज ही के या उपज वेंसी ने जीवनी ना कुटूम्ब हारू ज्यो समान जोयी तीनी पूर्ती कर ली।

(ग) दावेदार मां एवा आदमी के आदमयूं नूं टोळू कटम्ब, के कटम्ब नूं टोळू केवाय से, इना कानवण गणतीवार मा गणनीवार अधिकारों नी मानेता ने तीन मां सामलेत करवा नी दावो करे से।

(घ) कानवण नी धारा उनी उपधारा (1) ना खण्ड (ग) ना माहिता 'गोणवन उपज के निपटान' (जंगल नी ऐवी उपज जो कि पड़तल पड़ी है अने कोई भी झाड़–झंकार लगाड़ी नी उपज जो लूणे से त्यों गोण उपज मा आवेसे) तिना निपटान (लुणवा मा) लेदे ती उपज ने भेली करवा वलां अने टोला आड़ी जीवा हारू ऐवी उपज (फसल) ना पोसण करवा लीदे गाम ना गाम मा अने जीने जगा फसल होएं तां ना तां बेड़ी ने कीमत बढ़ावी ने, जंगल ना एरिया मा माथा पर मेली ने साई–किल थी अने हाथ गाड़ी थी लावा लिवाजाना अने वेसवा नो भी कानवण से।

(ङ) 'जंगल ना अधिकार नी समिति' थी। नियम 3 ना माईते गाम सभा, सभा आड़ी भी गठन करवा मा समिति नी केवाय से।

(च) 'धारा' थी कानवण नी धारा केवाय से।

(2) त्यां सबद अने लेणो मा जां नियम मा आवे से तिने भले कम समझाईश का आवे से पण का कानवण मा साफ–साफ हमज़ मा आवी जाएं से जिनों अरथ त्योज औहे जो कानवण मा से।

(3) ग्राम सभा– (1) गाम नी पंतात नी आड़ी थी गाम सभा नो गठण। करहें। अने तिना पेहला झमेला मा ती आपणा सदेसो मा ही कम थी कम दह पण पन्द्र थी वदारे आदमियों ने जंगल अधिकारनी समिति ना सदेसा ना रूप मा सुणाव करे से तिनमा कम थी कम एक ताकड़ी (100 मा 33) नी संख्या की भील, भीलाला, अने पटेलिया बिजी आदिवासी नी संख्या होबी जोए। तिना सुणाव का एक तिहाई बयारो नो भी हक से। जां आदिवासी सदेस नी होए ता भी एक तिहाई बमरा रेहे।

(2) जंगल अधिकार समेती अध्यक्ष अने मंत्री (सचिव) बणावा नु नकी करीने तिनी खबर उपखण्ड भाग नी कमेटी ने आलहे।

(3) जंगल ना अधिकार नी समेती नो कोई सदेस भेळा नी (सामुदायिक) जंगल ना अधिकार नो दावेदार भी होए तैर ते तिने इनी सुसणा समेती ने आलहे अने जेर तिना दावा पर वस्चार करियो जाहे तैर त्यो कार्यवाही मा भाग नी लेहे।

(4) गाम नी सभा ना काम– (1) गाम नी सभा जंगल अधिकार नी मंसा अने हीम ना हरूप हारू कारवाई सुरू करहे अने तिना ही लागेला दावा नी हुणवाई करेगा।

(ख) जंगल अधिकारो ना दावेदारो नी गणती त्यार करहें। अने तिहूना दावा ना हिसाब हारू एक रजिटर राखहे। जो केंदर सरकार ना हुकम तिना हरूप मा स्थाई रिकाड राखहे।

(ग) जंगल ना अधिकारो ना दावा पर ठेराव आदमियो नी भलाई का अने तिना बारा मा जो अधिकार लागू थाईला से तिनी हुणवाई मा बरोबर मोको आलया बाद पास करहे अने तिने उपखण्ड भाग नी समेती कन मोकली देही।

(घ) कानवण ली धारा 4 नी उपधारा 2 नी भाग ड मा फेर थी वस्यार करहे अने।

(ड) कानवण नी धारा 5 ना नियमो ने लागू करवा हारू जंगली जीव, जंगल अने जीव झंकार नी रक्षा हारू आपणा सदेस ही समितियो नो गठण करहें।

(2) गाम सभा ना सम्मेलन मां गणपूर्ती एवा गाम सभा ना बदा सदेस ना (2/3) बे भाग नो तीसरो व हिस्सा ना कम थी कम सदेसो नो सुणाव थाहे।

पण कईना गाम मा आदिवासी अने गैर आदिवसियों की जातियो नी जनसंख्या आदिवासीयो ना जत्था अने खेती ना पेहला टोला ना सदेस ना पूर्ति पूरी रूप थी काम करवा नो हक थाहे।

(3) गाम सभा हारू राज ना अधिकारियू थी जरूरी मदद अलाड़ी जाहें।

(5) उपखण्ड ना भाग नी समेतीः– राज सरकार नीसा लिखेला सदेस ना हाते उपखण्ड भाग नी समेती नो गठण करहें। ऐतरे;

(क) उपखण्ड अधिकारी के इना बराबर नो अधिकारी– अध्यक्ष

(ख) उपखण्ड नो भार झेलनारो अधिकारी के तिना बराबर नो अधिकारी केवाई से।

(ग) बिलाक के तेसीले भाग नी पंसातो थी तीन सदेस जीने जिला पंसात थी नाम नो प्रस्ताव करहे तिनमा कम थी कम बे आदिवासी रेहे त्यां ऐवा मानेला ओहे कि जो जंगल मा रेहनारा होई सके अने आदिवासी गुरूप ना सदेस ओहे। अने जा कोई आदीवासी नी से तां बेसदेस ऐवा मानेला ओहे कि जो कि ठेट ना रेहनारा जंगलवादी अने एक बयर सदस औटी देह नी कानवण ती सोपडी ने संविधान केसे नी सटवी सूसी मा आवा वळां सोकळा ना तीन सदेस जीवे सासण जिला परिषद ना परदेस नी परिषद अने बदा जोनल भाग नी परिसद भी नाम मोकल्यू जाहें। तिनमा कम थी कम एक बयर रेहे।

(घ) जनजातीय कल्याण विभाग ना उपखण्ड ना परभारी साहब नीते फेर जा ऐवा अधिकारी नयी होएं तां जो भी आदिवासी जातीयो (भील भीलाला, पटेलिया) नो काम करनारो प्रभारी अधिकारी रहे।

(6) उपखण्ड स्तर की समिति के कृत्य– (उपखण्ड भाग नी समेती ना कामू) उपखण्ड स्तर नी समेतीः–

(क) हरैक गाम सभा ना हुवाला झाड़खा अने जी जनावर ना बारा मा जिहूने हमाळी ने राखे अने राखवा नी जरूरत होएं ऐवा जंगल ना जीवु जंगल अने धणा बदां आली–आली ना जी जानवर नी रखाळी ना बारा मा तिहूंना फरज अने अधिकार, जंगल ना अधिकार धारण करनारा ना फरज अने बिजा कईना फरजो ना बारा मा बदी जानकारी जुगाड़ करावहे।

(ख) गाम सभा अने वन अधिकार समिति नो जंगल अने राजस्व नो नकसो अने वोट देनारानी सुसी अळाड़हे।

(ग) ताहनी बी गाम सभा जोडेला होएं तिहूने गाम नी सभा ना बदां ठेराव एक हात (साथ) मलावहे।

(घ) गाम सभा थी मेळेला नकसा अने जो भी रिकाड से त्यां बदां एकट्ठा करहें।

(ड) दावा नी हास–झूठ खरी करवा हारू गाम सभा ना नकसा अने ठेरावो नी परीकसा करहें।

(च) कईना जंगल ना अधिकारा ना हरूप अने हीम ना बारा मा गाम सभा ना विवादू नी हुणवाई करहें अने तिहूने न्याव पण करहें।

(छ) गाम सभा ना ठेरावथी दुःखी आदमियो, जिन माईतां राज कईनी आफिस नो रिकाड पण होएं तिनी अर्जीयो पर हुणवाई करहें।

(ज) ऐतरे उपखण्ड ना दावा हारू उपखण्ड भाग नी समेती ना हाते मेळजोळ करहें।

(झ) सरकार ना रिकाड मा मेल–मिलाप करवा ना बादमां मांग करेला जंगल ना अधिकारो ना बिलाक अने तेसील वार हरूप मा लिखा–पढ़ी ना अधिकारो ना हरूप ना कागदू (रजिस्टर रिकार्ड) ना हाते दावा ने उपखण्ड अधिकारी ना हाते जिला भाग नी समेती मा आखरी मजूरी हारू आगे बढ़ावही।

(ट) जंगल ना रेहनारां तिहूना जो कानवण से तिना माईतां अने नियमु ना जो बंधण से तिनथी सासण आड़ी ही तैय करेला जो उदेस (धारेलां कामु) अने तिनी काम–काज ना कारवाई मा जागरूकता पैदा करहें।

(ठ) दावेदार ना दावा ना अणु नियमु ना जो नाना बंधण– 1 (हरूप क अने ख) मा जेवा बंधेला फार्मूनी पेहल मा मळवा अने वगर पईसा नी बदी कार्यवाही थाई जाये ऐवु नकी करहें।

(ड) यो तै करहे कि गाम सभा ना झमेला मा जनता नी संख्या ना हाते बेरोकटोक, उगड़ती अने वना भीडू (निपक्ष) नी रीत थी न्याव करीयो जाहें।

(7) जिला भाग नी समेती (जिला स्तर की समिति) राज सरकार नीसे लख्या सदेस ना हाते जिला भाग नी समेती नो गठण करहे। अनेः–

(क) जिला कलीटर के उपायुक्त अध्यक्ष।

(ख) जोडेला खण्ड जंगल अधिकारी के जोडेला उपवन रखवाळा ना सदेस।

(ग) जिला भाग नी पंसात ना ताण सदेस जिहूने जिला पंसात आडी थी नाम वताडिया जाहें। जिनम। कम थी कम दो आदिवासी (अनु. जन.) जाति ना ओहे। त्यां ऐवा होवा जोएकि तिहूनु रेवास जंगल मा होएं। के आदिम (भील, भीलाला– पटेलिया) ना गुरूप ना होएं, टोळा ना होएं। जो ऐिवा टोळा ना सदेस नी होए तां जो ठेट नी जंगली रेवास में खैली होए ऐवी जाति ना दो सदेस अने एक बयर सदेस रेही। के संविधान नी सटी अनुसूसी ना माईतां आवा वळां सोकळा मा तीन सदेस स्वशासी जिला परिषद या परदेस नी परिषद या पूरी जोनल भाग नी परिषद थी नाम वताड़िया जाहे जिनमा कम थी कम एक बयर सदेस रेही।

(घ) जनजातीय कल्याण विभाग (आदिवासी क.वि.) ना जिला मा कईना कामनु भार झेलनारो अधिकारी नी ओहे तैर तां नो आदिवासी अधिकारी रेहे।

(8) जिला स्तर की समिति के कृत्य–जिला स्तर की समिति। (जिला भाग नी समेती ना कामु) जिला भाग नी समेती–

(क) यो ते करहे कि नियम 6 ना खण्ड (ख) ना माईतां वदी जाणकारी गाम सभा अने जंगल अधिकार समेती ने अलाड़ी दे है।

(ख) इना बारां मां परीकसा करहें कि इना बारा मा कोई बदां दावा, खासकर आदिवासी टोळा डगरा सारनारा अने फरेल आदिवासी जातीयो ना बदां दावा ना कानवण ना जो उदेस नो बदा ध्यान राखतां थका तिहुनो न्याव पडिग्ये। से कि नी तिनी जाळवण करवी।

(ग) उपखण्ड भाग नी समेती आड़ी ही तियार करला जंगल अधिकारों ना दावा अने तिना रिकाडू पर विश्चार करहें अने आखरी रूप मा तिहूनी मजूरी देहे।

(घ) उपखण्ड भाग ना दूःखी आदमियो नी अर्जीयो नी हुणवाई करेही।

(ड) जीवना जिला ना दावा नी अर्जीयो ना बारा मा बिजा जिला थी मेळजोळ करहें।

(च) पूरी तरे थी तियार सरकारी रिकाडू ना रजिस्टरू जिला माई अधिकारो ना जो रिकाड से तिनमा वन ना अधिकार नो हमेळो करवा नु आदेस जारी करही।

(छ) जेतरां घड़ी पेलां रेकाडू ने आखरी रूप आळी देही वन अधिकार ने सस्पा (प्रकाशन) करवानु तै थाहे।

(ज) यो ते करहे कि कानवन ना अन्दर अने इहूना नियमुं ना बंधण 2 आने 3 मा जेवूकि वताडेलू से जंगल ना अधिकार अने हक ना रिकाड नी परमणित करेली तिनी जोडेली दावेदार अने तिनी हात नी गाम सभा मा आली दे दी होएं।

(9) राज ना भाग नी निगरानी समेतीः– राज सरकार नीसे लख्या सदेस ना हाते राज ना भाग नी निगराणी समेती नो गठण करहें। ऐतरेः–

(क) मुख्य सचिव–अध्यक्ष।

(ख) सचिव राजस्व विभाग– सदेस।

(ग) सचिव जनजातीय या समाज कल्याण विभाग–सदेस।

(घ) सचिव, वन विभाग–सदेस।

(ड) सचिव पंचायती राज–सदेस।

(च) प्रधान मुख्य वन संरक्षक–सदेस।

(छ) आदिवासी सलाकार परिषद ना तीन आदिवासी सदेस जिहूने आदिवासी सलाकार परिषद ना अधिक्स थी नाम वताडेलू होएं। अने जा कोई आदिवासी परिषद माहनो कोई सलाकार रेहे। तां राज सरकार आड़ी थी नाम वताडेला आडरू ना मान थी तीन आदिवासी सदेस।

(ज) आयुक्त जनजातीय कल्याण अने इना बराबरी वळां सदेस सचिव ओहे।

(10) राज्य स्तर की निगरानी समिति के कृत्यः– राज ना भाग नी निगरानी समेती ना काम–राज भाग नी निगराणी नी समेती–

(क) जंगल अधिकारो नी मानिता अने तिहूमा भेळा होवा ना तोंर–तरिका नी निगराणी हारू कायदा अने लिसाण नकी करहें।

(ख) राज मा जंगल अधिकारो नी मानिता, जास अने तिनी देखरेख करवानो काम काज।

(ग) जंगल अधिकारो नी मानिता जांस अने तिनमा सामलित होवा ना काम ना बारां मा से (छः) मईना नी रपोट पेस करवी अने नोड्ल सभा ने ऐवी लेखा–जोखा अने रपोट पेस करहें जिने नोड्ल आफिस ना साधु आड़ी थी मांग करी जाहें।

(ध) कानवण नी धारा 8 मा जेवूउपर लखेलू तिनी खबर मळता कानवण मा माहिता जुडेला तिना अधिकारियो ना खिलाप कार्यवाही करहें।

(ड) कानवण नी धारा 4 नी उपधारा बे (2) मा फेर थी वहती नी निगराणी करहें।

(11) ग्राम सभा द्वारा दावे फाईल करने उनकी अवधारणा अने सत्यापन करने की प्रक्रिया– गाम सभा थी दावा फाईल करवा तिहूनी पर वस्यार अने खरा–खोटा नी जांस ना कामूः–

(1) ग्राम सभा– (गाम नी सभा)

(क) दावा हारू मांग करहे अने इनु नियमु ना उपबंध (1) मा त्यार फार्मूमा दावो मजूर करवा हारू जंगल अधिकारी नी समेती ने पेस करहें। अने ऐवां दावो नी मांग तारीक 3 मईना ना माई नियम 13 मा लखेली कम थी कम बे साकसी हाते कटिचा जाही। पण गाम सभा जरूरी हमजे तो तें तीन मईना नी कोली तिनी हारू लखाण करया बाद तिनी लाम्बी सोड़ी वात करहें के लखहे।

(ख) आपणा टोळा ना जंगल ना जो सादनु से तिहूने हमजा ना तरीका सुरू करवा ना पेला कोई तारिक नकी करहें। जा जरोत पड़ी तै मेरे ने गाम सभाओं नी अने उपखण्ड भाग नी समेतियो ने पणे खबर आलहें।

(2) जंगल अधिकार नी समेती गाम सभा ने तिना नीसा लखेला। कामु मा मदद करहें।

( ) हरूप मा लखेला दावा अने ऐवा दावा नी गवां मा साक्सी लेवा तिनी मजूरी देवी अने राखवी।

( ) दावा अने साक्सी ना नक्सा लेख–जोखा तयार करवा।

( ) जंगल अधिकारो ना बारां मा दावा करवा वळा नी सूसी तयार करवी।

( ) अणु नियमु मा बंधीखत करेला जेम दावा नी जांस करवी।

( ) दावा ना हरूप अने तिनी वड़ोतरी ना बारां आपणा न्याव ने गाम सभा हामा अने तिहूने विश्चार हारू पेस करवु।

(3) लेदेला हरैक दावा नी जंगल अधिकार नी समेती थी लखीने एक हरका (एक रूपया) मजूरी दी जाची।

(4) जंगल अधिकार नी समेती, इहूना नियमु ना उपबंध 1 मा जेवाबंधण ना जो हरूप ख मा टोळा ना जंगल अधिकार हारू गाम सभा तरफ थी दावा तयार करवा।

(5) गाम सभा उपनियम (2) ना खण्ड (5) मा लेदेला न्याव सी ने जंगल अधिकार

समेती ना न्याव पर विश्चार करवां हारू पेहली खबर नी बेठक थाहे। पूरी तरे से ठेराव पास करीने तीने उपखण्ड भाग नी समेती मा मोकल वा।

(6) गाम पंसात नो मंत्री तिना काम हाते गाम नी सभा ना मंत्री ना रूप मा पण काम करहें।

12. जंगलाधिकार समेती थी दावा ना जांस करवा ना तौर–तरीका–

(1) जंगल अधिकार समेती दावेदार ना बारां मा अने जंगल विभाग ने तैवी खबर आलवा ना बाद–

(क) ताहनी ज़गा नो दोड़ो करहे अने तिनी जगा ना दावा नो रूप, तिनो वस्तार, साक्सी नो जीवे जांस करहें।

(ख) दावेदार अने हाक थी कईनु अलग हाक के लेख लेहे।

(ग) यो नकी करहे के डंगरा ना गोहरीयो अने फरेल आदिवासी जातियो ना दावा जो कि व्यष्टिक (खास–सदेस) टोळा ना के हमेस ना रेवासी जातियो नी आफीस के फेर तिहूनी समेती थी ली ने तिना अधिकारों नी धारणा हारू ऐवी वखत पर जांस करे से। तेरे ऐवा खास सदेस के टोळा के तिना वारिस हाजर रेसे।

(घ) यो नकी करहे कि जूना आदिवासी ना टोळा के पेहला ना खेती करनारा टोळा ना दावा सदेस ने तिना टोळा के ठेट ना रेवासी टोळा ही लेदा होएं वहती ना तिना अधिकारो नी धारण हारू तिनी वखत करिया जाहे। जेरे ऐवा टोळा के तिना वारिस हाजर रेहे अने।

(ड) मानिता आलवा हरकां हींम नु हेलाणु करीने हरेक दावा ना सोकळा नो नक्सो तयार करवो।

(2) तिना बाद जंगल अधिकार समेती ना दावा ना बारां मा आपणा न्याव नो लेखो–जोखो करहे अने तीना गाम सभा मा तिना वस्यार हारू आलहें।

(3) कईना बिजा गाम ना रिति–रिवाज के जूनी हद ना बारा मा कईना खिलापी दावो के कईना जंगल सोकळा मा एक थी वदारे गाम सभाओं सोकळा ना काम मा लेहे से ताहनी जंगल समितियों ने ऐवा दावा ना काम रूप पर वस्यार करवा हारू– सामळित बैठक लेवी जोएं। अने ताहनी गाम सभाओं या लखेली कार्यवाही पेस करहें।

पण गाम सभायों ना खिलाप ना दावो नो न्याव करवा मा आहार नी राखे से तो तिने गाम सभा ही उपखण्ड भाग नी समेती मा इना न्याव ने पाड़वा हारू मोकलवु जोएं।

(4) सूसना, लेख–जोखा के रिकाड हारू गाम सभा जंगल अधिकार नी समेती ना अरज करवा पर ताहना अधिकारी जेवी तेवी गाम सभा के जंगल अधिकारी समिति के ताहनी परमाण करेली तिना बिजा रूप नु कागळ आलहें के जोएं तैर कईना मोटा अधिकारी थी आपणो जवाब मजूर करावहें।

(13) जंगल ना अधिकारो ना हरूप हारू सबुत (साक्य) जंगल अधिकारी नी मानिता देवा (आलवा) अने काम पुरू करवा साक्सी के फेर बिजी वातयू नीसी लखेळी से त्मां पण भेळी रेहे।

(क) मनखां नी गणती नो लेखो–जोखो राखे अने बंदोबस्त नी रपोट अने नक्सो, हरग ना उपर जो गरे हैतिना फोटू काम नी योजणा काम मा आवनारां पैसा अने बिजा जो

भी सादनु नी जरूरत होएं तिनो मेल बिजी योजनाएं, सोटी योजणा जंगल नी जांस नी रपोट, बिजा जंगल ना अधिकार रिकार्ड, पट्टा के लीज (लीज मा 10 के 20 के 50 बरहूं नो पट्टो रेसे)। सावे जो बी नाम हो सरकार ही बणावेली समेतियों अने आयोग नी रपोट सरकार नो आदेस सरकारी सुसणा तिना बारां मा लखेलो रेकाड ठेराव हरका जनता नो रिकाड अने सरकारी रिकाड।

(ख) वोट देनारां, पेसाण नु फार्मू, कूपन, पेसाणनु फोटू जिनमा साब नी सील लागेली होएं, घेर नो बिल बिजली बिल, खास रेवानु परमाण–पत्र हरका सरकारी सिल लागेलो रिकाड।

(ग) घेर, झुपड़ी, अने जगा मा पूरो हदारो हरको खास काम तिनमा जगा ने बरोबर करवी। काईडा बांधवा, हेड़ा, पाळी बांधवा, सौकड़ियो बांधवी अने इना परकार ना बदां काम से।

(घ) आदो न्याव अने पूरा न्याव ना रिकाड, जिना माईतां कोर्ट नो आदेस अने तिनो करेलो न्याव पण से।

(ड) पेहलां ना रेन–सेण खेती करवा ना तौर–तरीका अनेघणी बदी एक पीढ़ी थी बिजी पीढ़ी ना जो पेराव (बाप दादा जो रेता करता आव्या) अने पुरानी वातयू नी खोज ना बारां मा जाणकारी भेळी करवी, बदां रजिस्टरो मा रिकाड तयार करवु, जो कईना जंगल ना अधिकार नो पोसण करवा नु खुलासो करें अने जिनमा भारत देह ना जो मनखा नो विज्ञान (ऐवो ज्ञान जिनो सबुत हामे... हो) तिनो सर्वे करेली ऐवी उज़ाली मोटी आफिस थी परमाण नी ताकित से।

(च) हावेहना राजा ना रजवाड़ा, अने परदेस अने ऐवा बिजा ऐरे–मेरे ना कोई लेखा–जोखा थी मेळेला रिकाड तिहुना मायता नकसा अधिकार ना लेखा–जोखा, खास अधिकार सूट आलेली होएं, तिनी राजी–मर्जी पण होवी जोएं।

(छ) कुआं, महाण, पोवितर जगा ऐवी पुराणी वहती नी थापण करवा वळी ठेट घणा बदा वरहू थी सालती आवी री बदी रीति भातियो।

(ड) पेहलां नी जमी ना रिकाड मा वताडेली अने पेला ना समया ना गाम ना बढ़वा ना रेवासी ना रूप मा मानेता मळेला खास आदमियों ना बाप दादा ना बाप दादा नो पतो लगाडवा वळी पीढ़ी;

(झ) लेखा–जोखा करेला दावेदार थी अलग डाह–डाहा नी वातायो।

(2) सामळित, टोळा जंगल अधिकार नी साकसी मा बिजी वातयू ना हाते नीसे लख्या सामळित ओहेः–

(क) वगड़ा जेवा टोळा ना अधिकार, सावे कईनाबी नाम थी जाणया जाये होएं।

(ख) ठेट ना सरवाडा (सरनोई) जड़हे अने जडेला मुजब जड़ी–जाड़ी गाठियो वळी जडे, सारा, जंगल ना खावा ना फळयो, अने बिजा सोटा जंगल नी उपजे जमा करवा ना सोकळा। मासला पकड़वानी जगा। पियत करवा ना ढंग, मनख अने डांडा–बोकड़ा बेहोडा ना धन ना पोसण हारू पाणी नी आवक नी जगायो, जंगली जड़ा–बुटी दवाईयो ना वेपार ना सोकळा।

(ग) ठाम टोळा थी बणावेळी भातियो ना जो वसेला हेलाणु पोवितर झाडू, मोटा भाटा माना दरेड़ा, तळाव अने नदियो वळा सोकळा, मुसळमान ना माहुण अने बिजां माहुण।

(3) गाम सभा उपखण्ड भाग नी समेती, जिला समेती, जंगल अधिकार ना हरूप करवा ना उपर जाहेरा (उल्लेखित) एक थी वदू हाकया (साक्सी) पर वस्यार करहें।

(14) उपखण्ड भाग नी समेती नी अरजियो (याचिकाएं) (1) गाम सभा ना ठेराव थी दुःखी आदमी, ठेराव नी तारीक ना साठ दन नी कोली ना मायते, उपखंड भाग नी समेती नी अरजी रिकाड मा राखी सकेगा।

(2) उपखण्ड भाग नी समेती, हुण वाई नी तारीक तै करहें। अने अरजी करनारी अने तिना हात (सम्बंधित) गाम सभा ने तिनी लखीन सुसना देवा ना हातेहात (साथ ही) हुणवाई हारू तै तारिक थी कम थी कम पन्द्रे दन पेला अरजी करनारा ना गाम मा कईनी (सुविधाजनक सार्वजनिक स्थान पर) ऐवी जगा जा बदा बेही सके अने बदी वात सोलियत होएं ऐवी जगा सुसण लगाड़ी ने तिहुने खबर आलवी।

(3) उपखण्ड भाग नी समेती मजूर करे कि नी करे के फेर जिना गाम नी सभा ने तिना वस्यार हारू आदेस करहें।

(4) ऐवा हकम मळया बाद गाम सभा तीस दन नी कोली ना मायतां अरजी नी सुणवाई करहें। तिना हकम पर कोई ठेराव पास करहें अने तिने उपखण्ड भाग नी समेती मा मोकलहे।

(5) उपखण्ड भाग नी समेती गाम सभा ना ठेराव पर वस्यार करहें। अने आरजी ने के मजूर करहें के नी मजूर करी ने ठीक थी आदेस पास करहें।

(6) घणा दन नी पडेली अरजियो पर उल्टो असर नाख्या वगर उपखण्ड भाग नी

समेती बिजा दावेदारो ना जंगल अधिकारो ना लेखां नी परीक्सा लेहे अने तिने भेळी करहें। तेम तिना उपखण्ड भाग ना अधिकारी थी सिने जिला भाग नी समेती मा मोकलहें।

(7) बे के वदारे गाम सभाओं मा लड़ाई नी दसा मा अने कईनी गाम सभा ही आलेली अरजी पर के उपखण्ड भाग समेती थी जीव ना वस्यार थी झगड़ो निपटावा ताहनी गाम सभाओं नी भेगी बेठक बोलावहे। अने तरी (30) दन नी कोली मा आपस मा हमजी ने कोई न्याव नी पड़हे ते उपखण्ड भाग समेती तिना गाम नी सभाओ नी हुणवाई करिया बाद झगड़ा नी वात नकी करहें ने ठीक नो आदेस पास करहें।

(15) (1) उपखण्ड भाग समेती ना न्याव थी दुःखी कईनो आदमी उपभाग समेती नो न्याव थाईली तारीक ना हाठ (60) दन ना माई जिला भाग नी समेती ने अरजी पेस करी सकहें।

(2) जिला भाग समेती हुणवाई नी तारिक नक्की करहें। फरयादि के ताहना उपखण्ड भाग नी समेती ने तीने लखीने तीनी हाते तारीक लखी ने कम थी कम पन्द्रे दन पेहला अरजी वाला ना गाम ना आसपास नी जगा हुणवाई हारू वताड़हे।

(3) जिला भाग नी समेती के ते अरजी ने मजूर करहें के ना मजूर करहें के ताहनी उपखण्ड भाग नी समेती ने तिना वस्यार हारू आदेस करहें।

(4) ऐवा आदेस मळया वाद उपखण्ड भाग नी समेती 30 दन ना माई बैठक करहें। फरियादी अने गाम सभा नी हुणवाई करहें। तिना आदेस पर नकी करी ने तिनी सुसना जला भाग ने आलहें।

(5) बाद मा जिला भाग नी समेती अर्जी पर वस्यार करहें अने अरजी ने मजूर करहे के ना मजूर करीने ठीक आदेस पास करहें।

(6) जिला भाग नी समेती ना दावेदार के दावेदारों ना जंगल अधिकारों ना रिकाड ने सरकार ना रिकाड मा जरूरी फेर–बदल करीने जिला कलीटर के जिला कमिश्नर ने मोकळहें।

(7) बे के वदू उपखण्ड भाग नी समेती ना आदेसु ना वसमा कईनी फरक दसा मा जिला भाग नी समेती जीवना वस्यार थी झगड़ो खुटाड़वानी नजर थी ताहना उपखण्ड भाग नी समितियो नी भेगी बैठक बोला वहे। अने आपस मा हमजवा नो न्याव नी थायो ते जिला भाग नी समेती ताहनां उपखण्ड भाग नी समितियों नी हुणवाई करया बाद झगड़ा वगर न्याव थाया वगर अने ठीक नो आदेस आलहे।

डॉ. बचित्तर सिंह,
संयुक्त सचिव
(फा.सं. 17014 / 02 / 2007–पी.सी. एडं वी. (जिल्द))

आदिवासी अने
बिजा ठेट ना जंगल रेहवासी (वन अधिकारो की मान्यता)
नियम–2007
भारत सरकार
आदिवासी काम मंत्रालय
नियम–3

(नियम 8 (6 ज) भाळो)

सामलेता मां (बदामळी ने) डूंगर (जंगल) ना अधिकार

(1) सामलेत मां जंगल अधिकार ना धारक (नो) ना ने नाम (नियम मां रीने)

(2) गाम/गाम सभा

3. गाम पंसात

4. तेसील/तालुका

5. जिला

6. आदिवासी/बीजा ठेटना जंगल रेहवासी...

(7) सामलेत अधिकारों नो रूप

8. सरत कइनी होय ते

9. नीसा लख्या नी हाते हीमाड़ां नो खुलासो जलम नो हीमाडो अने/ के खसरो कंपाटमेंट सं. हाते खास–हिमाड़ा नुं हेलाणु

सामलेत जंगल अधिकार जंगी/ना धारक (नो) ना/ने नाम

1.....

2.....

3.....

हमू नीसा दस्कत करनार..... (राज नूं नाम) सरकार हारू अने तीनी तरफ सामलेत जंगल अधिकारो हारू लखेला धारकू न हक मां लखेला जंगल अधिकार नी पुस्टि हारू दस्कत करयी से।

मंडल नो जंगल अधिकारी/ **जिला आदिवासी कल्याण अधिकारी**

उपवन नो रक्सक

जिला कलक्टर/उप आयुक्त

आदिवासी अने
बिजा ठेट ना जंगल रेहवासी (जंगल अधिकारो की मानेता)
नियम–2007

भारत सरकार
आदिवासी काम ओफिस (मंत्रालय)

उपाबंध–1
(नियम 8 (झ) देखें)
प्ररूप–क
जंगल नी जमी ना अधिकार हारू दावा ना पारूप
(नियम 11 (1) (क) देखें)

1.दावो करनारा नु नामः–

2.आदमी/बयर नु नामः–

3.पिता/माता नु नामः–

4.पताः–

5.ग्रामः–

6.ग्राम पंसातः–

7.तेसील/तालुकाः–

8.जिलाः–

9.(क) आदिवासी जातिः हां/नहीं परमाण पतर नी फोटू कापी जो कि कईना मोटा साब नी सिल लागेली होएं तिनी एक कापी भेळी लगाड़वी (ख) बिजा ठेट ना जंगल रेवासीः हां/नहीं के पति/पत्नी आदिवासी से प्रमाण हारू एक प्रमाण करावेली फोटाकापी हाते करो।

(10) कदम ने बीजा सदेसो नुं नू नाम अने ऊमर (सोरा के मोटयार, आसरा ही जीवा वाळां हाते) जमी ऊपर दावा नो खुलासो।

1.कब्जा वाळी जमी नो बदारो

(क) रेवा हारू

(ख) जीवे खेती करवा हारू, के कइना हारू

2.रांजा (लड़ाई) नीजगा, के कइनो होयते (कानवण नी धारा 3 (1) (क) ने भाळो)।

3.पेहला हरकी फेरती वहती हारू जमी कइनी ध्यान मां होयते।

4.जमी जाहनो जमी नो मुवावजो आल्या वगर तीने ताहतो नहाड़ी देदो से।

5.(काणवण नी धारा 4 (8) भाळे) जंगल गामूं नी जमी नो वदारो, कइनो होय ते (कानवण नी धारा 3 (1) (ज) भाळो)।

6.बीजो कइनो जातिधरम नो अधिकार, कइनो होयते (कानवण नी धारा 3 (1) झ भाळो)

7.पक्स मां हाक (नियम 12 भाळो)

8.बीजी कइनी सूसना दावेदारी (रों) के दस्खत/अंगूठा नीहेलाणी।

आदिवासी अने
बिजा ठेट ना जंगल रेहवासी (जंगल अधिकारो की मानिता)
नियम–2007
भारत सरकार
आदिवासी काम मंत्रालय
उपाबंध–1 (नियम 6 (झ) भाळो)
नियम–क (प्ररूप–क)
जंगल नी जमी ना अधिकार हारू दावा ना पारूप
(नियम (1) (क) अने (4) भाळों)

1.दावेदार (से) का/के नाम

(क) एफडीएसटी समुदाय; हां/नहीं

(ख) ओटीएफडी समुदाय हां/ना

2.गामः–

3.गाम पंसातः–

4.तहसील/तालुकाः–

5.जिलाः–

प्रयोग करेला सामलेत अधिकारों ना रूप (1) सामलेत अधिकार जेवानिस्तार, कइनो होय कानवण नी धारा 3 (1) (ग) भाळो। (2) पाकेला जंगल फसल पर अधिकार, कइनो होय (कानवण नी धारा 3 (1) (ग) भाळो)। (3) सामलेत अधिकार। (ख) सवा हारू, कइनो होय। (ग) ठेटना सादनो हूदी घूमड़कड़ अने ढोर सरावा वाला नी पोंस (पहुंच) कइनो होय। कानवण नी धारा 3 (1) (छ) भाळो। (4) पीटीजी व खेती पेहला टोला हारू धरती वहती अने पेहली वहती नी सामलेत नी वखत के कइनी होय (कानवण नी धारा 3 (1) उ. भाळो)। (5) नाळा नाळा जीव थाया तक अकल धन, अने आपसी ज्ञान, तक पूगवा नो अधिकार, कइनो होय ते। (कानवण नी धारा 3 (1) (ठ) भाळो)

6.बीजा ठेट ना अधिकार कइना होयते (कानवण नी धारा 3 (1) भाळो)

7.पक्ष मां हाक (नियम 12 भाळो)

8.बीजी कइनी सूसना दावेदार (रो) नी दस्खत/अंगूठा नी हेलाणी।

आदिवासी अने
बिजा ठेट ना जंगल रेहवासी (जंगल अधिकारो की मानेता)
नियम–2007

भारत सरकार
आदिवासी काम ओफिस (मंत्रालय)

उपाबंध–1
(नियम 8 (झ) देखें)
प्ररूप–क
जंगल नी जमी ना अधिकार हारू दावा ना पारूप
(नियम 11 (1) (क) देखें)

1.दावो करनारा नु नामः–

2.आदमी/बयर नु नामः–

3.पिता/माता नु नामः–

4.पताः–

5.ग्रामः–

6.ग्राम पंसातः–

7.तेसील/तालुकाः–

8.जिलाः–

9.(क) आदिवासी जातिः हां/नहीं परमाण पतर नी फोटू कापी जो कि कईना मोटा साब नी सिल लागेली होएं तिनी एक कापी भेळी लगाड़वी (ख) बिजा ठेट ना जंगल रेवासीः हां/नहीं के पति/पत्नी आदिवासी से प्रमाण हारू एक प्रमाण करावेली फोटाकापी हाते करो।

(10) कदम ने बीजा सदेसो नुं नू नाम अने ऊमर (सोरा के मोटयार, आसरा ही जीवा वाळां हाते) जमी ऊपर दावा नो खुलासो।

1.कब्जा वाळी जमी नो बदारो

(क) रेवा हारू

(ख) जीवे खेती करवा हारू, के कइना हारू

2.रांजा (लड़ाई) नीजगा, के कइनो होयते (कानवण नी धारा 3 (1) (क) ने भाळो)।

3.पेहला हरकी फेरती वहती हारू जमी कइनी ध्यान मां होयते।

4.जमी जाहनो जमी नो मुवावजो आल्या वगर तीने ताहतो नहाड़ी देदो से।

5.(काणवण नी धारा 4 (8) भाळे) जंगल गामूं नी जमी नो वदारो, कइनो होय ते (कानवण नी धारा 3 (1) (ज) भाळो)।

6.बीजो कइनो जातिधरम नो अधिकार, कइनो होयते (कानवण नी धारा 3 (1) झ भाळो)

7.पक्स मां हाक (नियम 12 भाळो)

8.बीजी कइनी सूसना दावेदारी (रों) के दस्खत/अंगूठा नीहेलाणी।

आदिवासी अने
बिजा ठेट ना जंगल रेहवासी (जंगल अधिकारो की मानिता)
नियम–2007

भारत सरकार
आदिवासी काम मंत्रालय

उपाबंध–1 (नियम 6 (झ) भाळो)
नियम–क (प्ररूप–क)
जंगल नी जमी ना अधिकार हारू दावा ना पारूप
(नियम (1) (क) अने (4) भाळों)

1.दावेदार (से) का/के नाम

(क) एफडीएसटी समुदाय; हां/नहीं

(ख) ओटीएफडी समुदाय हां/ना

2.गामः–

3.गाम पंसातः–

4.तहसील/तालुकाः–

5.जिलाः–

प्रयोग करेला सामलेत अधिकारों ना रूप (1) सामलेत अधिकार जेवानिस्तार, कइनो होय कानवण नी धारा 3 (1) (ग) भाळो। (2) पाकेला जंगल फसल पर अधिकार, कइनो होय (कानवण नी धारा 3 (1) (ग) भाळो)। (3) सामलेत अधिकार। (ख) सवा हारू, कइनो होय। (ग) ठेटना सादनो हूदी घूमड़कड़ अने ढोर सरावा वाला नी पोंस (पहुंच) कइनो होय। कानवण नी धारा 3 (1) (छ) भाळो। (4) पीटीजी व खेती पेहला टोला हारू धरती वहती अने पेहली वहती नी सामलेत नी वखत के कइनी होय (कानवण नी धारा 3 (1) उ. भाळो)। (5) नाळा नाळा जीव थाया तक अकल धन, अने आपसी ज्ञान, तक पूगवा नो अधिकार, कइनो होय ते। (कानवण नी धारा 3 (1) (ठ) भाळो)

6.बीजा ठेट ना अधिकार कइना होयते (कानवण नी धारा 3 (1) भाळो)

7.पक्ष मां हाक (नियम 12 भाळो)

8.बीजी कइनी सूसना दावेदार (रो) नी दस्खत/अंगूठा नी हेलाणी।

आदिवासी अने
बिजा ठेट ना जंगल रेहवासी (जंगल अधिकारो की मानिता)
नियम–2007
भारत सरकार
आदिवासी काम मंत्रालय
उपाबंध–2 (नियम 8 (ज) भाळो)
नियम–क (प्ररूप–क)
कब्जा ना अदारे जंगल जमी हारू हक

1. जंगल पर हकूं ना धारक (ने), ना/ने नाम (पति–पत्नी हातें)
2. बा अने आई ना नाम
3. पळेती नूं नाम
4. पतूं
5. गाम
6. गाम पसात
7. तेसील/तालुका

8. जलो

9. आदिवासी/बीजी ठेटनी जंगल वहती

10. सोकळा (क्षेत्रफल)

1. खसरा/कंपार्टमेंट सं. हाते खास हिमाड़ा नी हेलाणी ही हिमाड़ा नो उखेल

यो हक आलवा हरको से पण कानवण नी धारा 4 नी उपधारा (4) मां इनो अदलो बदलो नी थाहे।

हम नीसा दस्खत करवा वाळा ..... (राज नूं नाम) सरकार हारू अने तीन तरफ थी ऊपर जंगल अधिकारूं नी पुष्टि (से एवी) करवा नी दस्खत करयीं से।

मंडल नो जंगल अधिकारी/ **जिला आदिवासी कल्याण अधिकारी**

उपवन नो रक्सक

जिला कलक्टर/उप आयुक्त